आधुनिक भारत का इतिहास

राष्ट्रवाद

(खंड-3)

-मणिकांत सिंह

1. कांग्रेस के अंदर समाजवाद के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक प्रभावी गुट के रूप में 'इंडिपेंडेंस ऑफ इंडिया लीग' की स्थापना में निम्नलिखित में से कौन सा समूह शामिल है–

(a) जयप्रकाश तथा नरेन्द्र देव

(b) जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाष बोस

(c) नरेन्द्र देव तथा बाबा रामचंद्र

(d) मदन मोहन मालवीय एवं सुभाषचंद्र बोस

2. ‘योजना समिति’ का गठन निम्नलिखित में किस अधिवेशन में हुआ था?

(a) कराची

(b) लखनऊ

(c) फैजपुर

(d) हरिपुरा

3. कांग्रेस ने अपने किस सम्मेलन में 20 सूत्री समाजवादी कार्यक्रम आरम्भ किया था?

(a) कराची

(b) लखनऊ

(c) फैजपुर

(d) हरिपुरा

4. 1939 में कांग्रेस मंत्रिमण्डल ने सात प्रान्तों में त्यागपत्र दे दिया था, क्योंकि–

(a) कांग्रेस अन्य चार प्रांतों में मंत्रिमण्डल नहीं बना पाई थी।

(b) कांग्रेस में 'वामपक्ष' के उदय से मंत्रिमण्डल का कार्य कर सकना असम्भव हो गया था।

(c) उनके प्रान्तों में बहुत अधिक साम्प्रदायिक अशान्ति थी।

(d) उपर्युक्त कथनों में से कोई भी सही नहीं है।

5. निम्नलिखित में से कौन कॉन्ग्रेस समाजवादी दल का प्रमुख नेता था–

(a) एम.एन. रॉय

(b) गणेश शंकर विद्यार्थी

(c) पट्टम ताणु पिल्लै

(d) आचार्य नरेंद्र देव

(5) गांधी जी ने ब्रिटिश साम्राज्य को ही नहीं, बल्कि पश्चिमी संस्कृति को भी चुनौती दी। विवेचना कीजिए।

Ans- गांधीजी पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरुद्ध थे। उन्होंने राजनीतिक आधार पर विरोध किया। इन्होंने साम्राज्यवाद के राजनीतिक पक्ष एवं सांस्कृतिक पक्ष दोनों पर एक साथ चोट की।

साम्राज्यवाद के राजनीतिक पक्ष पर निम्न विभिन्न रूप से चोट की–

(i) चम्पारण एवं आंदोलन की शुरुआत — - - - -
(ii) ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ असहयोग की नीति - - -
(iii) अहिंसा की नीति को एक महत्वपूर्ण हथियार बनाया।
(iv) भारतीय जनता के मन में ब्रिटिश शासन के प्रति भय दूर करना।

इसी प्रकार साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक पक्ष पर निम्नलिखित रूप से चोट की–

- पश्चिम देशों में औद्योगिक उत्पादन, नगरीकरण एवं शोषण की आलोचना।
- पूंजीवादी आर्थिक मॉडल की जगह ग्रामीण विकास का मॉडल।
- प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग पर बल देना।
- केन्द्रीकरण पर आधारित पश्चिमी विकास के मॉडल की जगह ग्रामीण स्तर पर बल दिया।

आधुनिक भारत

(खंड-3)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1929-39)

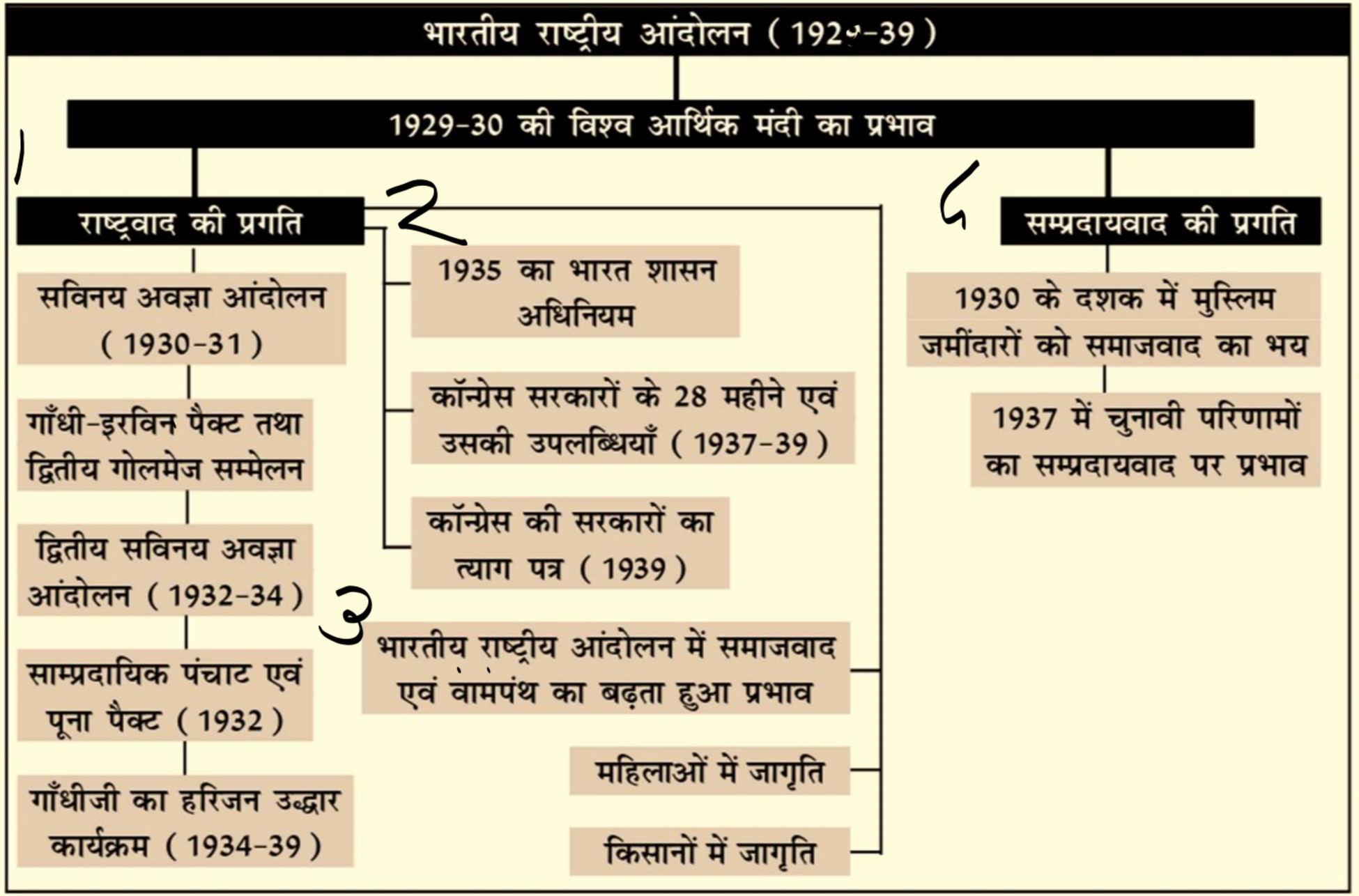
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1929-39)
1929-30 की विश्व आर्थिक मंदी का प्रभाव
1
राष्ट्रवाद की प्रगति
सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-31)
गाँधी-इरविन पैक्ट तथा द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन (1932-34)
साम्प्रदायिक पंचाट एवं पूना पैक्ट (1932)
गाँधीजी का हरिजन उद्धार कार्यक्रम (1934-39)
2
1935 का भारत शासन अधिनियम
कॉन्ग्रेस सरकारों के 28 महीने एवं उसकी उपलब्धियाँ (1937-39)
कॉन्ग्रेस की सरकारों का त्याग पत्र (1939)
3
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाजवाद एवं वामपंथ का बढ़ता हुआ प्रभाव
महिलाओं में जागृति
किसानों में जागृति
4
सम्प्रदायवाद की प्रगति
1930 के दशक में मुस्लिम जमींदारों को समाजवाद का भय
1937 में चुनावी परिणामों का सम्प्रदायवाद पर प्रभाव

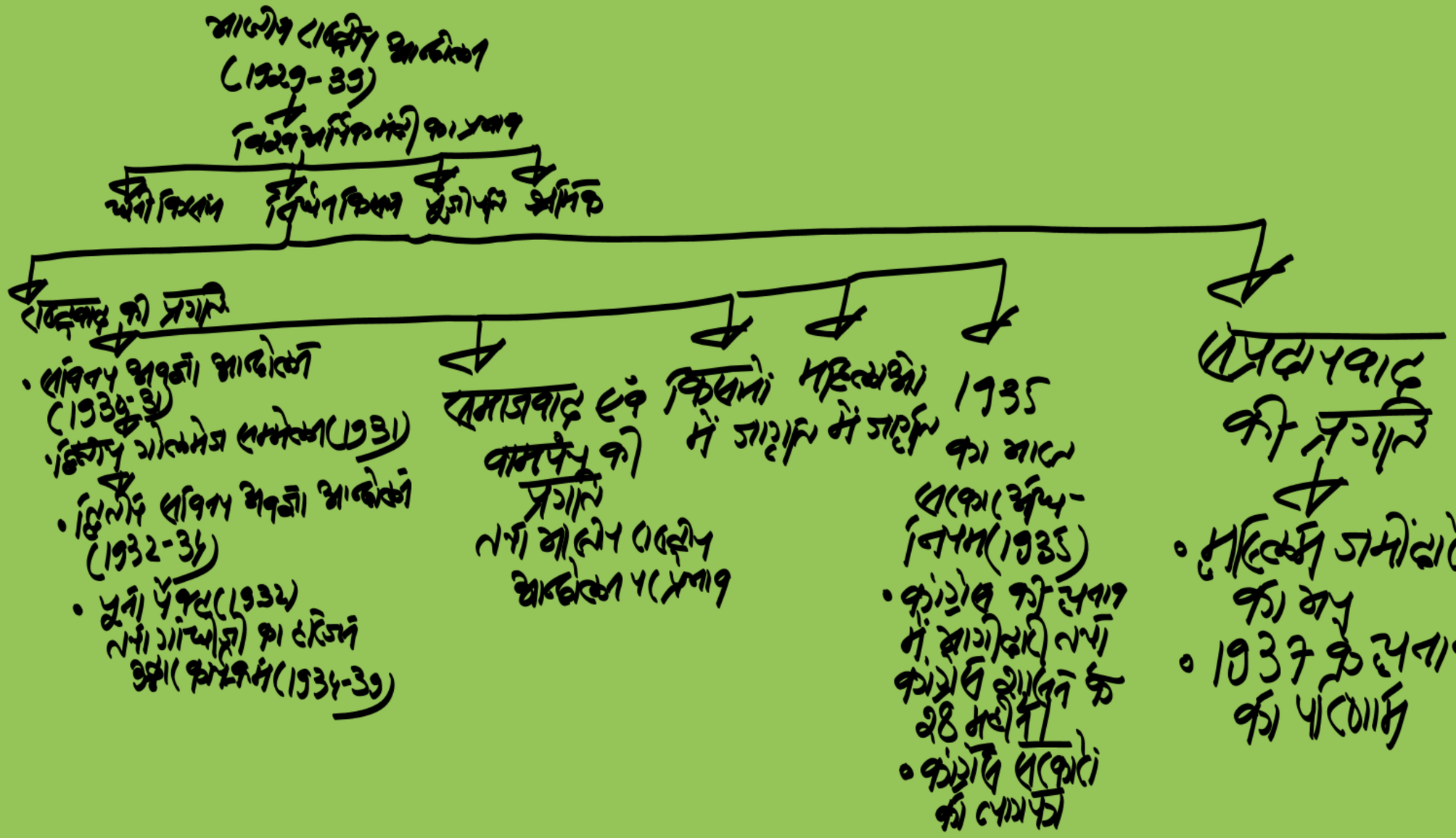

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन (1929-39)

विश्व आर्थिक मंदी का प्रभाव

- कृषि क्षेत्र
- उद्योग क्षेत्र
- बुर्जुआ वर्ग
- श्रमिक

राष्ट्रवाद की प्रगति

- सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930-31)
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931)
- द्वितीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1932-34)
- पूना पैक्ट (1932) तथा गांधीजी का हरिजन उद्धार कार्यक्रम (1934-39)

समाजवाद एवं वामपंथ की प्रगति

तथा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर प्रभाव

किसानों में जागृति

मजदूरों में जागृति

1935 का भारत सरकार अधिनियम (1935)

- कांग्रेस की चुनाव में भागीदारी तथा कांग्रेस शासन के 28 महीने
- कांग्रेस सरकारों की योग्यता

सम्प्रदायवाद की प्रगति

- मुस्लिम जमींदारों का भय
- 1937 के चुनाव का परिणाम

सविनय अवज्ञा आंदोलन

- 1930 तक भारत में आंदोलन की पृष्ठभूमि बनने लगी थी। इसमें निम्नलिखित कारकों का योगदान रहा था–

1. 1929–30 की विश्व आर्थिक मंदी ने भारत के विभिन्न सामाजिक वर्गों को प्रभावित किया। इसने धनी एवं निर्धन किसान, पूँजीपति एवं श्रमिक, सभी पर पृथक्–पृथक् प्रभाव छोड़ा तथा विभिन्न आंदोलनों में उनकी भागीदारी को सुनिश्चित किया।

- धनी किसान इस मंदी से इसलिए प्रभावित हुए क्योंकि वे बाजार के लिए उत्पादन करते थे, वहीं निर्धन किसानों के लिए महाजनी ऋण की कमी पड़ गई। उसी प्रकार, पूँजीपति साम्राज्यवादी वरीयता के प्रावधान तथा रूपये को मजबूत किये जाने से क्षुब्ध थे। दूसरी तरफ, मजदूरों को छँटनी का भय सता रहा था। अतः इस दौरान मजदूरों की भागीदारी विभिन्न आंदोलनों में अपेक्षाकृत कम हुई थी। इसलिए 1930 के दशक में वर्गीय आंदोलन ने राजनीतिक दिशा को प्रभावित किया तथा इस काल में आंदोलनों में तेजी आयी।

2. भारतीय युवा वर्ग में असंतोष बढ़ रहा था। उनमें से अनेक युवा क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की ओर बढ़ रहे थे। गाँधीजी एक बार फिर उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा में लाना चाहते थे।

3. गाँधीजी रचनात्मक ग्रामीण कार्यकम के माध्यम से कॉन्ग्रेस का जनाधार काफी विकसित कर चुके थे और अब वे नये आंदोलन के लिए तैयार थे।

4. 1929 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पारित किया तथा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति को एक आंदोलन छेड़ने के लिए भी अधिकृत किया। फिर जनवरी, 1930 में गाँधी ने इर्विन के समक्ष ग्यारह सूत्री मांगें रखीं, जिनका इर्विन द्वारा कोई जवाब नहीं देने पर गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ने का निर्णय लिया।

- गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत 'नमक कर कानून' के उल्लंघन के साथ करने का निर्णय लिया। फिर 12 मार्च, 1930 को गाँधीजी ने साबरमती आश्रम से 78 अनुयायियों के साथ यात्रा शुरू की जिसे 'दाण्डी मार्च' कहा जाता है। उन्होंने 6 अप्रैल, 1930 ई. को दांडी में नमक कानून का उल्लघंन किया।

- सविनय अवज्ञा आंदोलन में एक व्यापक कार्यक्रम अपनाया गया। उदाहरण के लिए, तटीय क्षेत्र में नमक कानून का उल्लंघन, रैयतवाड़ी क्षेत्र में कर रोको आंदोलन, जमींदारी क्षेत्र में चौकीदारी कर रोको आंदोलन, नशीले पदार्थों की बिक्री करने वाले दुकानों के समक्ष धरना आदि।
- गाँधी की गिरफ्तारी के शीघ्र बाद यह आंदोलन भारत के विभिन्न क्षेत्रों में फैल गया। दक्षिण भारत में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने नमक कानून का उल्लंघन किया। उत्तर-पश्चिमी भारत में खान अब्दुल गफ्फार खाँ के नेतृत्व में पठानों ने 'खुदाई खिदमतगार' नामक संगठन बनाकर आंदोलन में भाग लिया। इसी तरह, आंदोलन का प्रसार पूर्वी एवं उत्तर-पूर्वी भागों में भी हुआ। फिर जनजातीय क्षेत्रों में आदिवासियों ने बड़े पैमाने पर वन कानूनों का उल्लंघन किया।
- **नमक को एक महत्त्वपूर्ण मुद्दे के रूप में क्यों चुना गया? :-** गाँधी ने सोच-समझकर नमक के मुद्दे को उठाया। नमक के माध्यम से उन्होंने भारत के करोड़ों चूल्हों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ दिया। सामान्य लोगों के लिए नमक का मसला एक आर्थिक मसला था, जबकि भारतीय बुद्धिजीवियों के लिए यह राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रश्न था। इस तरह नमक के मुद्दे को उठाकर गाँधी ने भारतीय बुद्धिजीवी एवं जनसामान्य के बीच की खाई पाट दी।

- **सामाजिक भागीदारी :-** सविनय अवज्ञा आंदोलन में व्यापक जनभागीदारी हुई थी। इसमें असहयोग आंदोलन की तुलना में किसानों की भागीदारी अधिक रही। उसी प्रकार, इसमें महिलाओं की भी भागीदारी रही। सबसे बढ़कर, असहयोग आंदोलन के विपरीत इसमें पूँजीपति वर्ग की भागीदारी रही। किन्तु इसमें छात्रों और बुद्धिजीवियों की भागीदारी आंशिक दिखती है। दूसरी तरफ, असहयोग आंदोलन के विपरीत इसमें मजदूरों की भी सीमित भागीदारी रही। इसके अलावा, इस आंदोलन में हिंदुओं और मुस्लिमों में वैसी एकता देखने को नहीं मिली जैसी असहयोग आंदोलन के समय दिखाई दी थी।
- असहयोग आंदोलन एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन के मध्य एक मूलभूत अंतर यह था कि असहयोग आंदोलन ने **'स्वराज'** को अपना लक्ष्य बनाया था, जबकि सविनय अवज्ञा आंदोलन ने **'पूर्ण स्वराज'** को अपना लक्ष्य घोषित किया था।

- भारतीय पूंजीपति वर्ग द्वारा कॉन्ग्रेस पर आंदोलन समाप्त करने के लिए दबाव बनाया जा रहा था क्योंकि निरंतर श्रमिक हड़ताल, आंदोलन एवं राजनीतिक उथल-पुथल से इस वर्ग को घाटा उठाना पड़ रहा था। दूसरी तरफ, मध्य प्रांत, महाराष्ट्र और कर्नाटक क्षेत्र में आदिवासी विद्रोह अनियंत्रित और खतरनाक रूप धारण कर रहे थे।
- 5 मार्च, 1931 को गाँधी एवं वायसराय इर्विन के मध्य एक समझौता हुआ जो 'गाँधी-इर्विन समझौता' के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के निम्नलिखित पहलू थे-
  - गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस ले लिया।
  - उन लोगों की रिहाई की जाए, जिन्होंने हिंसक घटनाओं में भाग नहीं लिया था।
  - उन लोगों को संपत्ति वापस दे दी जाए, जिनकी संपत्ति अधिग्रहण के पश्चात् किसी तीसरी पार्टी को नहीं बेची गयी हो।
  - तटीय क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों को अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए नमक बनाने की भी अनुमति दी गई।
  - लोगों को शांतिपूर्ण ढंग से नशीले पदार्थों की दुकानों पर धरना देने का भी अधिकार दिया गया।

❑ द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931) :-

- 1930 में होने वाले प्रथम गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस ने हिस्सा नहीं लिया था, किंतु 1931 में गाँधी-इर्विन पैक्ट के पश्चात् कांग्रेस के एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में हिस्सा लेने गाँधी जी लंदन गये। इस सम्मेलन में विभिन्न भारतीय राजनीतिक दलों और गुटों को प्रतिनिधित्व मिला हुआ था। गाँधीजी ने उन सबके साथ मिलकर भारत के संवैधानिक मुद्दे को आगे बढ़ाना चाहा, किंतु उन्हें निराशा तब हुई जब उन्होंने यह देखा कि मुस्लिम वर्ग के मॉडल पर दलित वर्ग, एंग्लो इंडियन, भारतीय ईसाई, यूरोपीय समूह सभी पृथक निर्वाचन की माँग करने लगे थे। गाँधी ने उन माँगों को ठुकरा दिया।
- फिर गाँधी को गहन निराशा तब हुई जब उन्होंने यह पाया कि रैम्जे मैकडोनाल्ड की सरकार कांग्रेस के साथ इस प्रकार का व्यवहार कर रही थी, मानो कांग्रेस भी अन्य भारतीय हित समूहों की तरह केवल एक हित समूह है। अतः गाँधी निराश होकर लंदन से वापस आ

❑ द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन :-

- इधर इर्विन की जगह एक अनुदारवादी वायसराय लॉर्ड विलिंग्डन का आगमन हो चुका था, जिसने कॉन्ग्रेस के प्रति दमनात्मक रुख अपनाया। उसने जवाहर लाल नेहरू तथा खान अब्दुल गफ्फार खान को गिरफ्तार कर लिया था। गाँधी ने आने के बाद वायसराय से साक्षात्कार के लिए समय की माँग की, किंतु वायसराय ने उन्हें साक्षात्कार देने से इंकार कर दिया।
- अब गाँधी के पास दूसरा कोई विकल्प नहीं था, अतः उन्होंने एक बार फिर 4 जनवरी, 1932 को सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ दिया। किंतु सरकार पहले से ही तैयार थी, कई प्रकार के दमनात्मक कानून बनाये जा चुके थे, कांग्रेस एक गैर कानूनी संस्था घोषित कर दी गई तथा सरकार का उग्र दमन चक्र आरंभ हुआ, इस प्रकार आंदोलन की कमर टूटने लगी।

❑ सांप्रदायिक पंचाट तथा पूना पैक्ट :-

- वस्तुतः द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में विभिन्न संप्रदायों एवं दलित वर्गों के लिये पृथक निर्वाचन मंडल के विषय पर कोई सहमति नहीं बन पायी थी। अतः इस समस्या के समाधान के लिये ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने 16 अगस्त, 1932 ई. को एक घोषणा की, जिसे 'सांप्रदायिक पंचाट' कहा जाता है।
- मुसलमान, सिख तथा यूरोपियनों को पहले से ही पृथक् निर्वाचन का अधिकार था, अब इस साप्रदायिक पंचाट के तहत दलितों को भी हिंदुओं से अलग एक अल्पसंख्यक वर्ग मानकर पृथक् निर्वाचन का अधिकार दे दिया गया। ब्रिटिश सरकार के इस निर्णय को गांधीजी ने एक राष्ट्र के रूप में भारत को तोड़ने के लिये ब्रिटिशों का एक षड्यंत्र माना। अतः गाँधीजी ने सांप्रदायिक पंचाट का विरोध करने के लिये यरवदा जेल में 20 सितंबर, 1932 ई. से आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया।

- मदन मोहन मालवीय की मध्यस्थता में गाँधी एवं डॉ. अंबेडकर के बीच एक समझौता हुआ, जो 'पूना समझौता' के नाम से जाना जाता है। पूना समझौता के अनुसार, अंबेडकर ने पृथक् निर्वाचन पद्धति के स्थान पर संयुक्त निर्वाचन पद्धति को स्वीकार कर लिया। इसके बदले केंद्रीय विधान परिषद् में दलित वर्ग के लिये सीटों की संख्या में लगभग 18% की वृद्धि की गई तथा प्रांतीय विधान मंडलों में सीटों की संख्या को 71 से बढ़ाकर 148 कर दिया गया।

❑ गाँधीजी का हरिजन उद्धार कार्यक्रम :-

- पूना समझौते के बाद गाँधी को एक नया मुद्दा मिल गया, वह था हरिजन उद्धार कार्यक्रम। फिर गाँधी ने हरिजन यात्रा शुरू की तथा रचनात्मक ग्रामीण कार्यक्रम में लग गए। हरिजन यात्रा के दौरान उन्होंने छुआ-छूत उन्मूलन का व्यापक प्रचार-प्रसार किया। इस समय गांधीजी ने स्वराज से अधिक अस्पृश्यता को महत्त्व दिया। उन्होंने 'अछूतों' को 'हरिजन' (ईश्वर की संतान) की संज्ञा देकर उन्हें मंदिरों, सार्वजनिक तालाबों, सड़कों एवं कुँओं पर समान अधिकार दिलाने के लिये सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया। उन्होंने 'हरिजन' नामक पत्र का संपादन आरंभ किया तथा 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की। अब उनका ध्यान सविनय अवज्ञा आंदोलन से हट गया। अतः मई, 1933 ई. में उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन को अस्थायी रूप से और अप्रैल, 1934 में स्थायी रूप से वापस ले लिया।

प्रश्न :- अपसारी उपागमों एवं रणनीतियों के होने के बावजूद महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अंबेडकर का दलितों की बेहतरी का एक समान लक्ष्य था। स्पष्ट कीजिये। (UPSC-2015)

- (प्रश्न विश्लेषण: यह प्रश्न अपने स्वरूप में **Hypothetical** है। **Key Words** हैं- 'अपसारी', 'उपागम', 'रणनीतियों', 'महात्मा गांधी', 'भीमराव अंबेडकर', 'दलितों की बेहतरी', 'लक्ष्य', 'स्पष्ट'।)

उत्तर: जब हमारे समक्ष दलित वर्ग के उत्थान का मुद्दा आता है तो हमारे मस्तिष्क में गांधी एवं अंबेडकर, दोनों की छवि उभरती है। दोनों आज़ादी को दलित वर्ग की दहलीज तक पहुँचाना चाहते थे। यद्यपि उनके सोचने के अंदाज तथा काम करने की पद्धति में अंतर था। इसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है-

- अंबेडकर दलित वर्ग के उत्थान के लिये आर्थिक पुनर्वितरण को आवश्यक मानते थे। उनका विचार था कि जब तक दलित लोग आर्थिक रूप से स्वावलंबी नहीं होंगे, तब तक वे सामाजिक शोषण से मुक्त नहीं हो सकेंगे। वहीं गांधी जी का मानना था कि अस्पृश्यता की समस्या सामाजिक मुद्दा है, इसलिये सामाजिक मोर्चे पर ही उसका हल ढूंढ़ा जाना चाहिये।

- उसी तरह अंबेडकर का मानना था कि दलित वर्ग का उत्थान तभी होगा, जब दलित वर्ग में अपने अधिकारों के प्रति सजगता होगी, परंतु गांधीजी, सवर्णों में करुणा का भाव जगाकर दलितों की दशा सुधारना चाहते थे। इसलिये दोनों अपनी सोच तथा अनुभव के आधार पर काम करते रहे।
- एक तरफ अंबेडकर ने जबरन मंदिर प्रवेश कार्यक्रम में दलित वर्ग का नेतृत्व किया, वहीं गांधीजी ने अछूतोद्धार कार्यक्रम पर बल दिया तथा सवर्णों को अपनी मानसिकता बदलने के लिये प्रोत्साहित किया।
- आरक्षण के मुद्दे पर भी गांधीजी तथा अंबेडकर के दृष्टिकोण में मतभेद था। गांधीजी आरक्षण को स्थायी विषमता उत्पन्न करने वाला कारक मानते थे, वहीं अंबेडकर दलित वर्ग के उत्थान के लिये आरक्षण को आवश्यक मानते थे। अंबेडकर के इस दृष्टिकोण को अंततः संविधान में जगह मिली।

- अंत में, अंबेडकर एक बुद्धिजीवी थे तथा उन्होंने दलित उत्थान के मुद्दे पर संसद, संविधान सभा एवं अन्य प्रकार के राजनीतिक मंचों पर अकादमिक बहस छेड़ी, वहीं गांधीजी एक सामाजिक कार्यकर्त्ता थे, अतः वे गाँव-गाँव में घूमकर तथा दलितों के बीच जाकर उनके उत्थान के लिये कार्य करते रहे।

उपर्युक्त तथ्यों के प्रकाश में हम ऐसा कह सकते हैं कि भारत में जो दलित उत्थान कार्यक्रम है, वह गांधीजी तथा अंबेडकर, दोनों की विरासत से संबद्ध है।

प्रश्न :- "ब्रिटिश के विरुद्ध गांधीवाद सबसे खतरनाक हथियार सिद्ध हुआ।" टिप्पणी कीजिये।

- (प्रश्न विश्लेषण: यह प्रश्न अपने स्वरूप में **Hypothetical** है। इसमें निम्नलिखित **Key Words** हैं- 'विरुद्ध', 'गांधीवाद', 'खतरनाक हथियार', 'टिप्पणी'।)

उत्तर: पश्चिमी साम्राज्यवाद की संपूर्ण संस्कृति हिंसा पर आधारित थी। प्रशासन एवं आंतरिक सुरक्षा दंड शक्ति पर आधारित थी। उत्पादन प्रणाली प्रतिस्पर्द्धा पर आधारित थी और पूंजीवादी बाज़ार के विस्तार में भी युद्ध एवं संघर्ष का सहारा लिया जाता था। इस क्रम में साम्राज्यवादी शक्तियों के द्वारा अत्याधुनिक हथियारों के समक्ष गांधीवाद सबसे खतरनाक हथियार सिद्ध हुआ, क्योंकि साम्राज्यवादी शक्ति के पास उसकी कोई काट नहीं थी। इसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है-

- गांधीजी के अहिंसा एवं सत्याग्रह के विचार ने सभी वर्गों, जैसे- किसान, ज़मींदार, व्यापारी, बच्चों एवं महिलाओं आदि को आकर्षित किया और राष्ट्रीय आंदोलन को मज़बूत किया। इस प्रकार, गांधीजी ने इसके माध्यम से एक वैकल्पिक राजनीति की शुरुआत की। गांधीजी की यह पद्धति ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध सबसे खतरनाक हथियार सिद्ध हुई।

- इन्होंने व्यक्तिवाद से बढ़कर वर्ग समन्वय पर बल दिया, ताकि जनशक्ति को बढ़ाया जा सके।
- गांधीजी की स्वराज की अवधारणा भी विलक्षण थी। उन्होंने इसके माध्यम से नैतिक स्वतंत्रता पर बल दिया। उन्होंने 1909 में लिखित 'हिन्द स्वराज' नामक पुस्तक में 'स्वराज' शब्द को स्पष्ट करने का प्रयास किया।
- गांधीजी ने पश्चिम की उपभोक्तावादी संस्कृति की खुलकर आलोचना की और पश्चिम के विपरीत ग्राम स्वराज पर बल दिया तथा विकेंद्रीकृत प्रशासन का मॉडल प्रस्तुत किया।
- इन्होंने रचनात्मक ग्रामीण कार्यक्रम के माध्यम से लाखों गाँवों को कॉन्ग्रेस की राजनीति से जोड़ा।
- सबसे बढ़कर गांधीवाद ने दुनिया के शोषित एवं वंचित लोगों को साम्राज्यवादी शक्ति के विरुद्ध लड़ने के लिये अहिंसा एवं सत्याग्रह के रूप में एक कारगर हथियार दिया, उदाहरणस्वरूप- USA के अश्वेत नेता मर्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका के नेता नेल्सन मंडेला आदि ने गांधीवादी तरीके को अपनाया।

इस प्रकार गांधीवादी विचारधारा, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ सबसे खतरनाक हथियार सिद्ध हुई।

भारत शासन अधिनियम, 1935

- गोलमेज सम्मेलन के पश्चात् सरकार द्वारा 1935 ई. का एक्ट लाया गया। कुछ प्रारंभिक आलोचनाओं के बावजूद कांग्रेस ने इसे स्वीकार कर लिया।

❖ **प्रमुख प्रावधान :-**

- ब्रिटिश भारत और देशी रियासतों को मिलाकर एक संघ का निर्माण किया जाना था, परंतु उसके लिये शर्त यह रखी गई कि कम-से-कम आधे राज्यों की स्वीकृति हो। चूँकि, यह स्वीकृति नहीं मिली, इसलिये व्यवहार में यह संघ अस्तित्व में नहीं आया।
- प्रांतों में द्वैध शासन को समाप्त कर प्रांतीय स्वायत्तता लागू की गई अर्थात् प्रांतों में उत्तरदायी सरकार की स्थापना की जानी थी। परंतु इस अधिनियम के अनुच्छेद-93 के अधीन गवर्नर को अत्यधिक विवेकाधीन शक्तियाँ दी गई थीं।

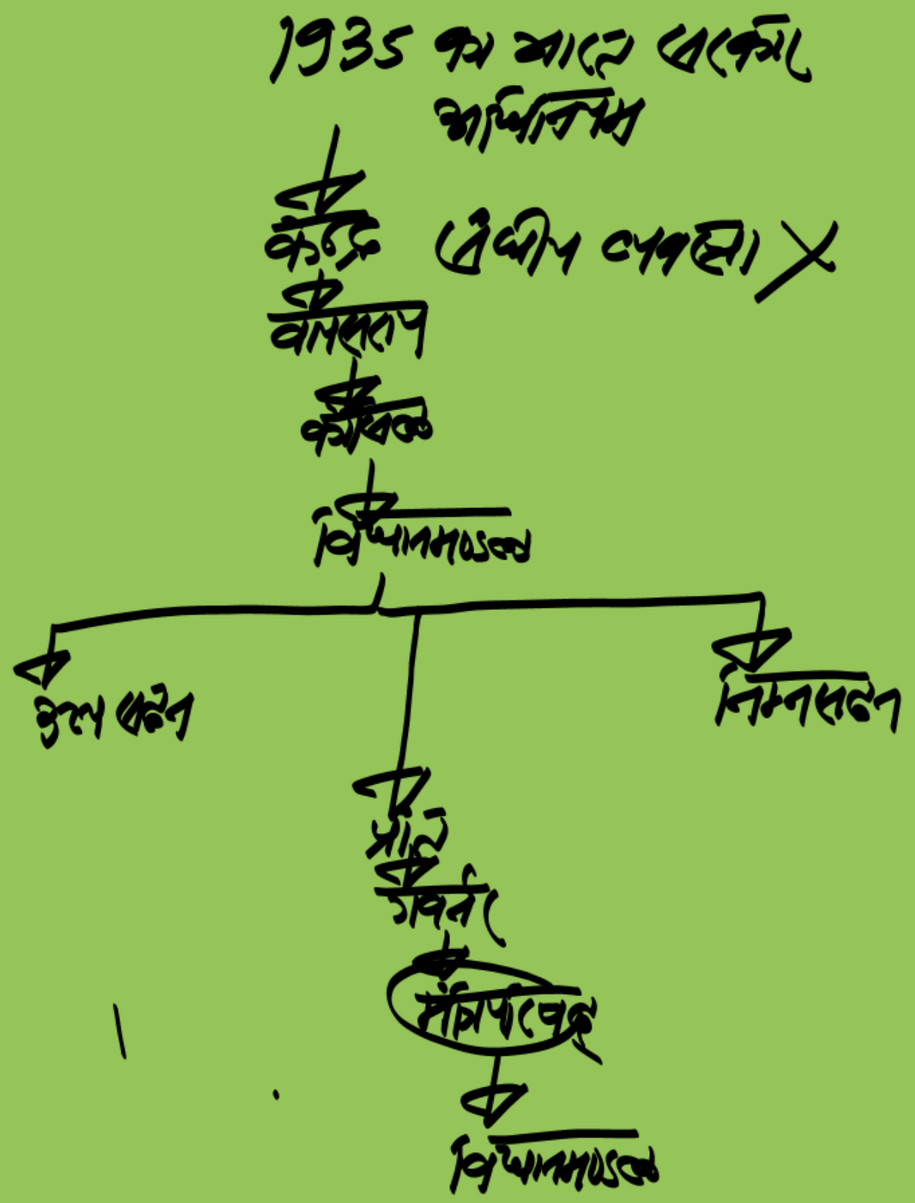

1935 এর আইনে প্রদেশে
অধিনিয়ম

অনুচ্ছেদ - 93

बंगाल - फजलुल हक

कृषक प्रजा पार्टी

यूनियनिस्ट पार्टी -

सिकंदर हयात खान

छोटू राम

मास्टर तारा सिंह

- मताधिकार का विस्तार हुआ। धनी एवं मझोले किसानों को मताधिकार मिला। यहाँ ब्रिटिश सरकार का उद्देश्य किसानों को अपनी ओर खींचकर कांग्रेस का जनाधार कमजोर करना था।
- इस अधिनियम के आधार पर बर्मा को भारत से पृथक् कर दिया गया।
- एक संघीय न्यायालय तथा रिजर्व बैंक की स्थापना का प्रावधान किया गया।

❑ कॉन्ग्रेस सरकारों के 28 महीने एवं उसकी उपलब्धियाँ

- 1935 का भारत शासन अधिनियम कई बातों में कांग्रेस के लिए निराशाजनक था। उदाहरण के लिए, इस अधिनियम में डोमिनियन स्टेटस तथा वयस्क मताधिकार का कोई प्रावधान नहीं था। संघीय व्यवस्था भी कांग्रेस की प्रगति को रोकने की एक साजिश थी। इसलिए आरंभ में कांग्रेस ने इसकी आलोचना की, किंतु फिर भी इसने चुनाव लड़ने का निर्णय लिया।
- 1937 के चुनाव में कांग्रेस को व्यापक सफलता मिली। कुल 11 प्रातों में से 5 प्रांतों में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत मिला तथा कांग्रेस 7 प्रांतों में सरकार बनाने की स्थिति में थी। ये प्रांत थे-बिहार, मध्य प्रांत, संयुक्त प्रांत, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत, मद्रास, बॉम्बे तथा उड़ीसा। आगे कांग्रेसी प्रांतों की संख्या बढ़कर 8 हो गई। इन प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल ने अपना पदभार सभाला। किंतु तभी कांग्रेस के अंतर्गत वामपंथी तथा दक्षिणपंथी गुट के बीच सरकार बनाने के मुद्दे पर विवाद आरंभ हो गया।

(i) राजनीतिक कैदियों की रिहाई

(ii) प्रेस की आजादी

(iii) रैय्यतों की रक्षा के लिए लगानबाड़ी कानून

(iv) शिक्षा के विस्तार के लिए कदम उठाना — वर्धा शिक्षा योजना

- कांग्रेस के अंतर्गत वामपंथी गुट का यह कहना था कि कांग्रेस को चुनाव के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहिए, किंतु उसे सरकार में शामिल नहीं होना चाहिए क्योंकि गवर्नर के हस्तक्षेप के कारण सरकार पंगु हो जायेगी और फिर भारतीय जनता के बीच सरकार की बदनामी होगी, किंतु दक्षिणपंथी गुट चुनाव लड़ने के साथ सरकार में शामिल होने के लिए भी तत्पर था। अंत में, गाँधी जी की मध्यस्थता एवं वायसराय के आश्वासन पर कि गवर्नर अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करेगा, कांग्रेस के द्वारा प्रांतीय सरकारें स्थापित की गईं।
- बंगाल में कृषक प्रजा पार्टी के फजलुल हक ने पहले कांग्रेस को गठबंधन सरकार बनाने का प्रस्ताव दिया, परंतु कांग्रेस के इंकार करने पर मुस्लिम लीग के साथ मिलकर सरकार बना ली।
- कांग्रेस ने अपने शासन के 28 माह में अपने घोषणापत्र में किए गए वायदे को निभाने का प्रयत्न किया। कांग्रेस अध्यक्ष सुभाष चंद्र बोस ने 1938 में राष्ट्रीय योजना समिति नियुक्त की थी। इसके माध्यम से कांग्रेस की सरकारों ने योजना के विकास में हाथ बंटाने के प्रयास किए।

- जेल से राजनीतिक कैदियों की रिहाई, प्रांतों में किसानों की सुरक्षा के लिए रैय्यतवाड़ी कानून बनाना, प्रेस की आजादी के संरक्षण को लागू किया गया। शिक्षा के विकास के लिए वर्धा बेसिक शिक्षा योजना लायी गई जिसे मुस्लिम लीग एवं हिंदू महासभा ने अस्वीकार कर दिया।

❑ कांग्रेस की सरकारों का त्यागपत्र

- सितम्बर, 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ होने के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने भारतीय दलों के साथ विचार-विमर्श किये बिना भारत को एक 'युद्धरत राष्ट्र' घोषित कर दिया। अतः कांग्रेस द्वारा इसका व्यापक विरोध आरंभ हुआ। गाँधी ने यह स्पष्ट कर दिया कि प्रथम विश्व युद्ध की तरह इस बार भारतीय जनता ब्रिटिश सरकार को बिना शर्त समर्थन नहीं देगी। गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस का यह कहना था कि सरकार को दो माँगें अविलंब पूरी करनी चाहिए। प्रथम, केंद्र में उत्तरदायी सरकार जैसा कोई प्रावधान हो। दूसरे, युद्ध के शीघ्र बाद भारतीयों के द्वारा निर्मित एक संविधान सभा का प्रावधान हो।

- चूँकि सरकार ने इस पर कोई स्पष्ट आश्वासन नहीं दिया। अतः नवम्बर, 1939 तक कांग्रेस की प्रांतीय सरकारों ने त्यागपत्र दे दिया। फिर कांग्रेस तथा सरकार के बीच विवाद आरंभ हो गया।
- जिस दिन कांग्रेसी सरकार ने त्यागपत्र दिया था, उस दिन को मुस्लिम लीग ने 'मुक्ति दिवस' के रूप में मनाया। मुस्लिम लीग के साथ अम्बेडकर और उनकी पार्टी ने भी मुक्ति दिवस मनाने में सहयोग दिया।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में समाजवाद एवं वामपंथ का बढ़ता हुआ प्रभाव

- 1920 तथा 1930 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर एक शक्तिशाली वामपंथी प्रभाव महसूस किया गया। इस प्रभाव से राष्ट्रीय आन्दोलन के चरित्र में ही परिवर्तन हो गया। अब तक कांग्रेस का मुख्य लक्ष्य जहाँ राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था, वहीं अब सामाजिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता की माँग भी की जाने लगी।

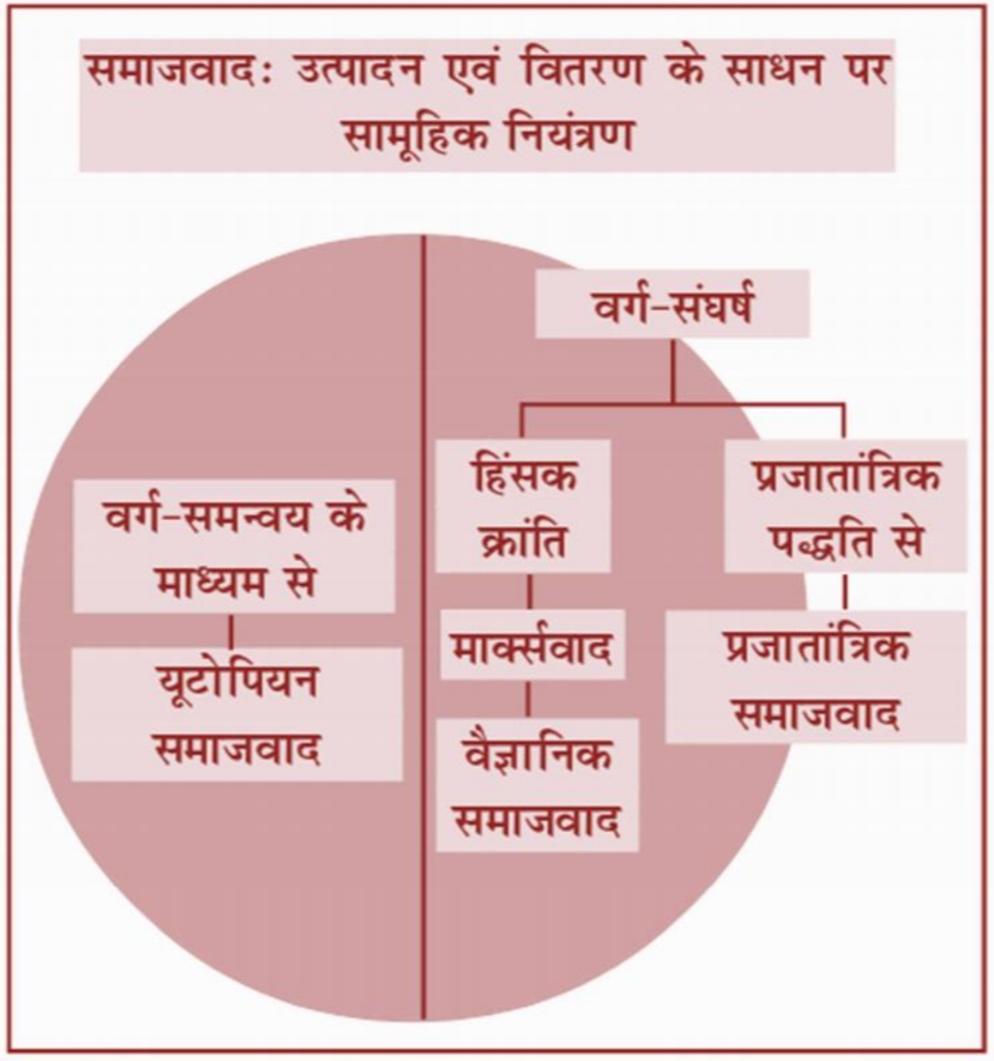

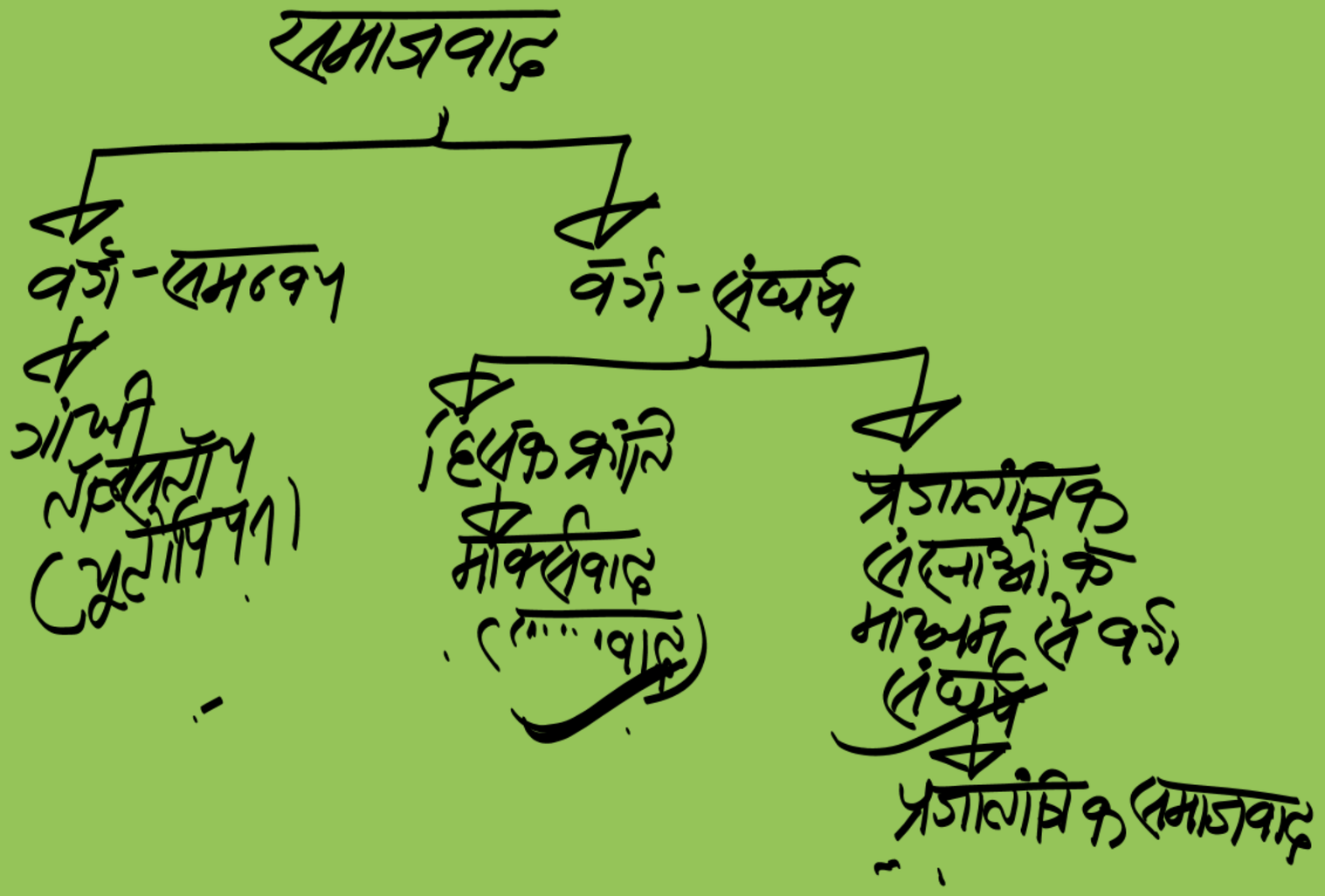

समाजवाद

- वर्ग-समन्वय
  - गांधी सर्वोदय (यूटोपियन)
- वर्ग-संघर्ष
  - हिंसक क्रांति
    - मार्क्सवाद (... वाद)
  - प्रजातांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से वर्ग संघर्ष
    - प्रजातांत्रिक समाजवाद

❖ **निम्नलिखित कारणों से समाजवाद को प्रेरणा मिली–**

1. भारत में वामपंथी विचार के उद्‌भव एवं प्रसार के पीछे मुख्य प्रेरक शक्ति 1917 की रूसी क्रान्ति को माना जाता है। 7 नवम्बर, 1917 को लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी ने जार के निरंकुश शासक को उखाड़ फेंका तथा रूस में विश्व के पहले समाजवादी राज्य की स्थापना की घोषणा की। रूस द्वारा शासन व्यवस्था में सर्वहारा को महत्त्वपूर्ण स्थान देने से उपनिवेशों की शोषित जनता में यह विचारधारा काफी लोकप्रिय हुई।
2. असहयोग आन्दोलन को अपेक्षित सफलता नहीं मिलने से निराश युवा वर्ग को मार्क्सवाद एक वैकल्पिक एवं तीव्र स्वतंत्रतागामी मार्ग लगा। इसके अतिरिक्त, युवाओं का एक वर्ग गाँधीवादी समाधान से संतुष्ट नहीं था।
3. 1929–30 की विश्व आर्थिक मंदी ने भी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की कमजोरी को उद्‌घाटित कर दिया। इस विश्वव्यापी मंदी से जिस प्रकार सोवियत रूस ने स्वयं को बचाए रखा, इससे भी साम्यवादी विचारधारा को लोकप्रियता मिली।

❖ **कांग्रेस समाजवादी दल (CSP) :** 1933 में कांग्रेस के कुछ नेताओं ने नासिक जेल में एक कांग्रेस समाजवादी पार्टी गठित करने का निर्णय लिया। यह पार्टी कांग्रेस के अन्तर्गत ही कार्य करती। फिर 1934 में कांग्रेस समाजवादी पार्टी का गठन हुआ। इसके कुछ महत्वपूर्ण नेता आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण, अन्नपूर्णा नंद सिंह, मीनू मसानी, अशोक मेहता आदि थे। जवाहरलाल नेहरू ने इस पार्टी को आशीर्वाद जरूर दिया, लेकिन वे इसके सदस्य नहीं बने।

- इस पार्टी का लक्ष्य था संगठन एवं विचारधारा के स्तर पर कांग्रेस को समाजवाद की ओर मोड़ना। विचारधारा के स्तर पर कांग्रेस को रूपांतरित करने का अर्थ था- कांग्रेस जनों को धीरे-धीरे इस बात के लिए राजी करना कि वे स्वतंत्र भारत की प्राप्ति के लिए समाजवादी दृष्टिकोण अपनाएं तथा वर्तमान आर्थिक मुद्दों पर अपना रूख किसानों और मजदूरों के पक्ष में रखें। संगठन के स्तर पर रूपांतरण का अर्थ था- ऊपर से नेतृत्व का परिवर्तन क्योंकि इस पार्टी के नेता मानते थे कि वर्तमान नेतृत्व जनता के संघर्ष को चरम तक ले जाने में अक्षम है।

❑ भारतीय राजनीति में समाजवादी एवं वामपंथी आंदोलन

❖ **कम्युनिस्ट आंदोलन :** सर्वप्रथम एम. एन. राय ने 1920 ई. में ताशकंद में 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी' की स्थापना की थी, किन्तु भारत में औपचारिक रूप से कम्युनिस्ट आंदोलन की शुरूआत 1925 में कानपुर से हुई जब एम. सिंगारवेलु की अध्यक्षता में कम्युनिस्ट पार्टी की अखिल भारतीय बैठक हुई। इसमें श्रीपद अमृत डांगे, नेली सेनगुप्त, मुजफ्फर अहमद, शौकत उस्मानी आदि शामिल हुए।

- कम्युनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस के साथ मिलकर काम करने का निर्णय लिया। उसका उद्देश्य था कांग्रेस की नीति को वामपंथ की दिशा में मोड़ना। कम्युनिस्टों के द्वारा श्रमिक एवं किसान पार्टी का गठन किया गया। इस प्रकार कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन में एक नए वामपंथी रूझान को प्रोत्साहन दिया गया।

❖ कांग्रेस पर समाजवादी विचारधारा से प्रेरित युवा नेताओं का प्रभाव :-

- कांग्रेस पर जवाहरलाल नेहरू तथा सुभाष चन्द्र बोस जैसे युवा नेताओं का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। इनके द्वारा विभिन्न अधिवेशनों की अध्यक्षता की गई और उनमें सर्वाधिक कार्यक्रम बनाये गये। जवाहरलाल नेहरू ने 1929 के लाहौर अधिवेशन, 1936 के लखनऊ अधिवेशन और 1937 के फैजपुर अधिवेशन की अध्यक्षता की। 1929 के लाहौर अधिवेशन में उन्होंने घोषित किया कि 'मैं समाजवादी हूँ'। फिर 1936 के लखनऊ अधिवेशन में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि "मैं मानता हूँ कि भारत और विश्व की समस्या का एक मात्र हल समाजवाद है"।
- फिर 1938 तथा 1939 में सुभाष चंद्र बोस ने क्रमशः हरिपुरा तथा त्रिपुरी अधिवेशन की अध्यक्षता की। यद्यपि त्रिपुरी अधिवेशन ने संकट का रूप ले लिया क्योंकि इस अधिवेशन के मध्य कांग्रेस के वामपंथी तथा दक्षिणपंथी गुटों के बीच संघर्ष छिड़ गया। दक्षिणपंथी खेमे के विरोध के बावजूद भी सुभाष के द्वारा चुनाव जीतना, वामपंथी विचारों की प्रगति को दर्शाता है।

❖ समाजवाद अथवा वामपंथ का योगदान :-

1. इसके प्रभाव से किसानों तथा मजदूरों की समस्या को प्रभावी ढंग से उभारा गया। इसने किसानों और श्रमिकों को संगठित किया तथा राजनीति में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहन दिया।
2. इसने स्वतंत्रता की परिभाषा बदल दी तथा राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक एवं सामाजिक स्वतंत्रता पर भी बल दिया।
3. इसने कांग्रेस के कार्यक्रम को भी समाजवाद की दिशा दे दी। उदाहरण के लिए, 1931 का कराची अधिवेशन (20 सूत्री समाजवादी कार्यक्रम)। कराची प्रस्ताव में श्रमिकों के लिए सामान्य कार्यक्रम; जैसे- अधिक पारिश्रमिक, बंधुआ मजदूरी की समाप्ति एवं ट्रेड यूनियन बनाने के अधिकार आदि को शामिल किया गया था।

4. 1936 के लखनऊ अधिवेशन एवं 1937 के फैजपुर अधिवेशन में किसानों की दशा में सुधार के लिए प्रगतिशील कृषि कार्यक्रम लाए गए। 1938 के हरिपुरा अधिवेशन में 'योजना समिति' का गठन हुआ, इसका अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू को बनाया गया।

5. महिलाओं के अधिकारों की रक्षा तथा राजनीति में धर्मनिरपेक्षता की बात लाना कम्युनिस्टों की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक थी।

❖ सीमाएँ :-

1. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने चीन के कम्युनिस्ट नेताओं की तरह व्यावहारिक दृष्टिकोण नहीं अपनाया अर्थात् उन्होंने भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल रणनीति नहीं अपनायी, बल्कि हमेशा मॉस्को एवं लंदन से ही निर्देशित होते रहे।
2. कांग्रेस समाजवादी दल ने अपना पहला लक्ष्य राष्ट्रवाद को बनाया और फिर समाजवाद को।
3. संकट के समय भी विभिन्न समाजवादी संगठन संयुक्त मोर्चा बनाने में विफल रहे। उदाहरण के लिए, त्रिपुरी संकट। इस संकट के समय न केवल कांग्रेस समाजवादी दल एवं नेहरू ने सुभाष का साथ छोड़ दिया था, वरन् समाजवादी दल ने भी सुभाष को किनारे कर दिया था।
4. जब तक भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन आरंभ हुआ, तब तक गांधीजी के नेतृत्व में एक सशक्त बुर्जुआ आंदोलन स्थापित हो चुका था। अतः भारत में कम्युनिस्टों के लिये गांधीवाद भी एक बड़ी चुनौती बना रहा।

❑ महिलाओं में जागृति

- डॉ. सरोजिनी नायडू एवं श्रीमती एनी बेसेंट के प्रयास से महिला मताधिकार के मुद्दे को प्रोत्साहन मिला था।
- प्रांतीय विधान मण्डलों के चुनाव में महिलाओं को मताधिकार 1930 तक मिल चुका था। फिर 1935 में केन्द्रीय विधान मण्डल में महिलाओं को मताधिकार मिला तथा उनके लिए सीटें भी आरक्षित की गईं।

❑ किसानों में जागृति

- 1920 के दशक में प्रांतीय किसान सभा की स्थापना की गई। फिर 1936 के दशक में सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन हुआ।
- 1937-38 में बिहार के बरहिया लाल में कार्यानंद शर्मा के नेतृत्व में बकाश्त आंदोलन हुआ।

सम्प्रदायवाद की प्रगति

❖ **1930 के दशक में मुस्लिम जमींदारों को समाजवाद का भय :-** 1930 के दशक में मुस्लिम जमींदार वर्ग बढ़ते हुए समाजवाद के खतरे से भयभीत थे। उन्हें डर था कि कहीं समाज आर्थिक आधार पर न बँट जाये, इसलिए उन्होंने साम्प्रदायिक विभाजन को प्रोत्साहन दिया।

❖ **1937 में चुनावी परिणामों का सम्प्रदायवाद पर प्रभाव :-**

1. 1932 ई. के साम्प्रदायिक पंचाट में मुस्लिम लीग की लगभग सभी माँगें मान ली गईं। अब उनके पास कोई मुद्दा नहीं रह गया था। अत: 1937 के चुनाव में मुस्लिम लीग की हार हुई। इस हार के पश्चात् मुहम्मद अली जिन्ना ने सबक सीखा। फिर जिन्ना ने मुस्लिम लीग को जन सामान्य पार्टी बनाने के लिए नई नीति और नये कार्यक्रमों को अपनाया।

2. दूसरी तरफ, हिन्दू महासभा को भी चुनावी विफलता का सामना करना पड़ा। अतः हिन्दू महासभा के अध्यक्ष मदन मोहन मालवीय ने स्वास्थ्य के आधार पर त्याग पत्र दे दिया, फिर 1938 ई. में नये अध्यक्ष वी.डी. सावरकर बने। उसी तरह, डॉ. हेडगेवार की मृत्यु के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नये अध्यक्ष गोलवलकर बने। इस प्रकार उग्र सम्प्रदायवाद का चरण अर्थात् जिन्ना, सावरकर और गोलवलकर का चरण प्रारंभ हुआ।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

(9) 1937 के चुनाव ने भारतीय राजनीति साम्प्रदायिक चेतना को बल प्रदान किया। परीक्षण कीजिए। (150 शब्द)

समाप्त

आधुनिक भारत

(खंड-3)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1939-47)

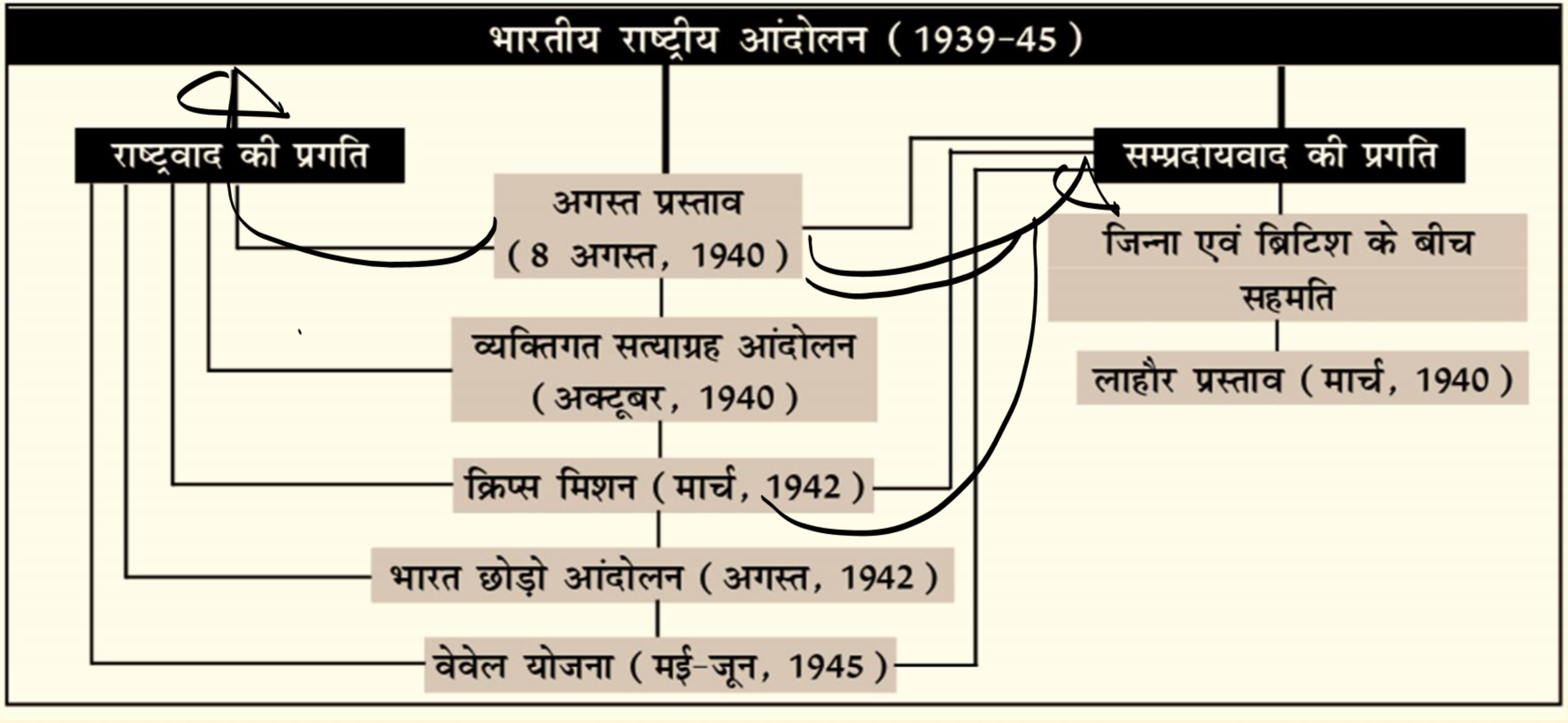
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1939-45)
राष्ट्रवाद की प्रगति
अगस्त प्रस्ताव
(8 अगस्त, 1940)
व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन
(अक्टूबर, 1940)
क्रिप्स मिशन (मार्च, 1942)
भारत छोड़ो आंदोलन (अगस्त, 1942)
वेवेल योजना (मई-जून, 1945)
सम्प्रदायवाद की प्रगति
जिन्ना एवं ब्रिटिश के बीच सहमति
लाहौर प्रस्ताव (मार्च, 1940)

राष्ट्रवाद की प्रगति

❖ द्वितीय विश्व युद्ध ने एक ही साथ राष्ट्रवाद एवं सम्प्रदायवाद की विचारधारा को प्रोत्साहन दिया।

❑ अगस्त प्रस्ताव (8 अगस्त, 1940 ई.)

- कांग्रेस की प्रांतीय सरकारों से त्यागपत्र के बाद कांग्रेस को संतुष्ट करने तथा युद्ध में कांग्रेस का सहयोग प्राप्त करने के लिए लॉर्ड लिनलिथगो ने 8 अगस्त, 1940 ई. को एक प्रस्ताव रखा, जिसे 'अगस्त प्रस्ताव' का नाम दिया गया। इस प्रस्ताव में अंतरिम सरकार का गठन करने की माँग को खारिज कर दिया गया। अतः इस प्रस्ताव को कांग्रेस और मुस्लिम लीग (पाकिस्तान की माँग स्पष्टतः स्वीकार न करने के कारण) ने भी अस्वीकार कर दिया।

➢ अगस्त प्रस्ताव में निम्नलिखित प्रावधान थे–

- इस प्रस्ताव में संविधान को लागू करने के लिये भारतीयों के अधिकार को स्वीकार किया गया और यह संविधान मुख्य रूप से भारतीयों द्वारा तैयार किया जाना था।
- इस प्रस्ताव के अनुसार एक युद्ध सलाहकार परिषद् का गठन भी किया जाना था।
- इसमें वायसराय की परिषद् के विस्तार का प्रावधान था, ताकि इसमें कुछ भारतीय सदस्यों को भी शामिल किया जा सके।

❑ व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन (अक्टूबर, 1940)

- सरकार का विरोध करने के लिये गाँधी जी के नेतृत्व में 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया गया। वस्तुत: उस समय कांग्रेस के अंदर एक अखिल भारतीय आंदोलन आरंभ करने के मुद्दे पर परस्पर मतभेद था। नेहरू के साथ-साथ गाँधी भी एक अखिल भारतीय आंदोलन छेड़ने से कतरा रहे थे क्योंकि उनका मानना था कि इसके कारण फासीवादी शक्ति की स्थिति मजबूत हो जायेगी।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह गांधीजी की विचारधारा पर आधारित सत्याग्रह था, जिसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक स्तर पर यह बतलाना था कि द्वितीय विश्वयुद्ध में भारतीय जनता ब्रिटिश सरकार के साथ नहीं है। इस व्यक्तिगत सत्याग्रह में विनोबा भावे पहले सत्याग्रही बने तथा दूसरे सत्याग्रही जवाहरलाल नेहरू थे।

❑ क्रिप्स मिशन (मार्च, 1942)

- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान दक्षिण-पूर्व एशिया में ब्रिटिश के पाँव उखड़ रहे थे। साथ ही, ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल पर भारत के साथ समझौता करने के लिए मित्र राष्ट्रों का दबाव बढ़ रहा था। अतः मार्च, 1942 में ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चर्चिल की सरकार ने भारतीय नेताओं से वार्ता करने के लिये स्टैफोर्ड क्रिप्स के अधीन एक मिशन भेजा।

➢ क्रिप्स मिशन प्रस्ताव में निम्नलिखित प्रावधान थे-

- युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारत को डोमिनियन राज्य का दर्जा दिया जाएगा।
- युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारत को संविधान निर्माण की शक्ति दी जायेगी और यह संविधान केवल भारतीयों के द्वारा निर्मित होगा। गाँधीजी ने इसे 'पोस्ट डेटेड चेक' कहा। कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग, दोनों ने क्रिप्स प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

❑ भारत छोड़ो आंदोलन (अगस्त, 1942)

❖ रणनीति एवं कार्यक्रम :-

- 7 अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक बंबई में अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस बैठक में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पेश किया गया और 8 अगस्त को कुछ संशोधन के बाद उसे पारित कर दिया गया। 8 अगस्त, 1942 को गांधीजी ने बंबई बैठक में जनता को 'करो या मरो' का नारा दिया। अगस्त संकल्प पर बोलते हुए गांधीजी ने अहिंसक जनांदोलन का आह्वान किया।
- इस प्रस्ताव के पारित होने के शीघ्र बाद सरकार सक्रिय हो गई तथा 9 अगस्त, 1942 के सुबह तक कांग्रेस के सभी महत्वपूर्ण नेता गिरफ्तार कर लिए गए, परंतु जनता अनियंत्रित हो गई। फिर 9 अगस्त से 14 अगस्त के बीच मुंबई एवं कलकत्ता अशांत रहे।

- 15 अगस्त तक यह ग्रामीण क्षेत्रों में फैल गया। बिहार के भोजपुर क्षेत्र से यह संयुक्त प्रांत के भोजपुर क्षेत्र में फैल गया तथा बलिया एवं गाजीपुर में चित्तू पांडे के अधीन एक समानांतर सरकार स्थापित हुई। उसी प्रकार, मिदनापुर में एक जातीय सरकार स्थापित हुई। वैसे तो इस आंदोलन का प्रभाव संपूर्ण भारत पर देखा गया, परंतु इसके चार प्रमुख केंद्र रहे थे- बिहार-उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, बंगाल, महाराष्ट्र-कर्नाटक।
- सरकार के द्वारा भी अभूतपूर्व दमन चक्र लगाया गया। इसलिए जब ग्रामीण क्षेत्रों में इस आंदोलन की कमर टूटने लगी, तो फिर छात्रों और बुद्धिजीवियों ने इसकी कमान संभाली और गोरिल्ला पद्धति से संघर्ष जारी रखा। यह स्मरणीय है कि यह एक ऐसा आंदोलन था जिसे कांग्रेस ने अधिकृत रूप में कभी भी वापस नहीं लिया था।

➢ भारत छोड़ो आंदोलन का महत्व :-

- इस आंदोलन ने निम्नलिखित तरीके से स्वतंत्रता के मुद्दे को प्राथमिकता की पहली सूची में ला दिया–

1. इस आंदोलन से यह साबित हुआ कि राष्ट्रवाद समाज के निचले स्तर पर पहुँच गया है।
2. इसने बताया कि ब्रिटिश को अपना शासन बनाए रखने के लिये सेना और पुलिस पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है।
3. इस आंदोलन ने ब्रिटिश को बताया कि भारतीय पूर्ण स्वतंत्रता से कम किसी भी समझौते पर संतुष्ट नहीं होंगे।
4. भविष्य में किसी भी आंदोलन में हिंसक या अहिंसक तरीके के बीच सीमांकन की किसी भी रेखा को खींचना मुश्किल होगा।

प्रश्न :- "भारत छोड़ो आंदोलन ने भारत की स्वतंत्रता के मुद्दे को प्राथमिकता की पहली सूची में ला दिया।" टिप्पणी कीजिये।

(प्रश्न विश्लेषण: यह प्रश्न अपने स्वरूप में **Hypothetical** है। **Key Words** हैं- 'भारत छोड़ो आंदोलन', 'भारत की स्वतंत्रता', 'प्राथमिकता', 'पहली सूची', 'टिप्पणी'।)

उत्तर: भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। यह आंदोलन न केवल ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सबसे सशक्त व मुखर साबित हुआ, बल्कि इसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को प्राथमिकता की पहली सूची में लाकर रख दिया। इसे हम निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं-

- इस आंदोलन का स्वरूप इतना व्यापक रहा था कि इसने पूरे भारत को अपने आगोश में ले लिया। इतना ही नहीं, इस आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को यह स्पष्ट कर दिया कि अब भारतीय जनता स्वतंत्रता से कम किसी समझौते पर तैयार नहीं होगी।

- इस आंदोलन में काफी हद तक वर्गीय हितों के शून्य हो जाने का संकेत मिला था। अब भारतीय जनता वास्तविक शत्रु को पराजित करने के लिये आपसी भेदभाव भुलाने को तैयार थी।
- सबसे बढ़कर, अब तक ब्रिटिश को ऐसा विश्वास था कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में जो आंदोलन होगा, वह अहिंसक आंदोलन होगा, परंतु भारत छोड़ो आंदोलन ने यह सिद्ध कर दिया कि भविष्य में जो आंदोलन होगा, उसमें हिंसा व अहिंसा के बीच स्पष्ट भेद करना मुश्किल हो जाएगा। अतः यह ब्रिटिश के लिये खतरे की घंटी थी।
- यह आंदोलन कॉन्ग्रेस के पूर्व आंदोलनों से भिन्न था, क्योंकि इस आंदोलन ने पहली बार राष्ट्रवादी तथा साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच समझौता रहित संघर्ष का चरम रूप दिखा दिया था। अब राष्ट्रीय आंदोलन की एकमात्र मांग स्वतंत्रता बन गई थी। अतः भारत छोड़ो के आह्वान के बाद पीछे नहीं मुड़ा जा सकता था। औपनिवेशिक सरकार के साथ भविष्य में जो भी वार्ता होनी थी, वह सत्ता के हस्तांतरण के मुद्दे पर होनी थी।

इस प्रकार, स्पष्ट है कि इस आंदोलन ने स्वतंत्रता को प्राथमिकता की पहली सूची में ला दिया।

❑ वेवेल योजना

- नये वायसराय वेवेल ने एक योजना प्रस्तुत की, इस योजना के अनुसार–

1. वायसराय की परिषद् में वायसराय को छोड़कर बाकी सभी 10 सदस्य भारतीय होने थे।
2. वायसराय का कहना था कि यद्यपि उसकी विवेकाधीन शक्तियाँ बनी रहेंगी परन्तु उसने आश्वासन दिया कि वह उसका दुरूपयोग नहीं करेगा।
3. फिर 10 प्रतिनिधियों में से 5 कांग्रेस द्वारा दिए जाने थे और 5 मुस्लिम लीग द्वारा। यह अपने आप में एक प्रगतिहीन कदम था क्योंकि मुस्लिम लीग का राजनीतिक वजन कॉन्ग्रेस के बराबर का नहीं था।

- फिर भी कांग्रेस ने इसे स्वीकार किया, परन्तु मुख्य समस्या तब आई जब कांग्रेस ने अपने प्रतिनिधियों में 2 मुस्लिम प्रतिनिधियों, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद और खान अब्दुल गफ्फार खान को चुना। किन्तु जिन्ना ने इन प्रतिनिधियों का विरोध कर दिया क्योंकि उनका कहना था कि मुस्लिम प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार केवल मुस्लिम लीग को है।
- इस मुद्दे पर 14 और 25 जून के बीच शिमला में एक सम्मेलन भी हुआ, किन्तु इसका समाधान नहीं निकला तथा वेवेल ने इस योजना को रद्द कर दिया। इस प्रकार जिन्ना का वीटो सफल हो गया।

संप्रदायवाद की प्रगति

- **जिन्ना एवं ब्रिटिश के बीच सहमति एवं लाहौर प्रस्ताव (मार्च, 1940) :-** जैसा कि ब्रिटिश सरकार ने अपने युद्ध प्रयासों में कॉन्ग्रेस का समर्थन खो दिया था, इसलिये मुस्लिम लीग का समर्थन पाने के लिये ब्रिटिश सरकार ने सांप्रदायिकता के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। औपनिवेशिक सरकार ने भारत में मुसलमानों के एकमात्र नेता के रूप में जिन्ना को स्वीकार किया। इससे पूर्व ही जिन्ना ने मार्च, 1940 में लाहौर प्रस्ताव लाकर पृथक् एवं स्वतंत्र मुस्लिम राज्य के लक्ष्य को स्वीकार कर लिया था।
- **संप्रदायवाद के क्षेत्र में अगस्त प्रस्ताव का योगदान:-** इसने मुस्लिम लीग को वीटो शक्ति दे दी क्योंकि इसमें यह प्रावधान लाया गया था कि भारत में कोई भी ऐसा संविधान मंजूर नहीं किया जाएगा, जिस पर मुस्लिमों (अल्पसंख्यक) की सहमति न हो।

- **मुस्लिम संप्रदायवाद में क्रिप्स मिशन की भूमिका:-** इसमें एक 'लोकल ऑप्शन' का प्रावधान लाया गया था अर्थात् युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारतीयों के द्वारा निर्मित होने वाली संविधान सभा से अगर कोई प्रांत अलग रहना चाहे, तो उसे एक पृथक् संविधान बनाने का अधिकार होगा। यह 'लोकल ऑप्शन' का प्रावधान भारत की एकता और अखंडता के लिए घातक था तथा यह गुप्त रूप में पाकिस्तान की योजना को प्रोत्साहन था।
- **मुस्लिम संप्रदायवाद के क्षेत्र में वेवेल योजना की भूमिका:-** 1945 की वेवेल योजना में मुस्लिम लीग को अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग करने का पहला अवसर प्राप्त हुआ, जब वेवेल के प्रयासों से लीग के पाँच सदस्यों को मिलाकर एक अंतरिम सरकार का गठन किया जाना था। लेकिन जिन्ना अंतरिम सरकार में कॉन्ग्रेस द्वारा किसी भी मुस्लिम को नामित किये जाने के पक्षधर नहीं थे। अंत में, जिन्ना के वीटो के कारण वेवेल ने इस योजना को रद्द कर दिया।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात्)

1945-47

स्वतंत्रता की ओर

- भारत छोड़ने को प्रेरित करने वाले कारक-
- ब्रिटिश साम्राज्य का पतन।
- भारत में निम्न स्तर तक राष्ट्रवादी चेतना का प्रसार।
- आजाद हिन्द फौज का मुकद्दमा एवं नौसैनिक विद्रोह।
- ब्रिटेन में सरकार का परिवर्तन।
- मार्च, 1946 में अल्पसंख्यकों के प्रति सरकार की नीति में परिवर्तन।
- मई-जून, 1946 में 'कैबिनेट मिशन योजना'।
- सितम्बर, 1946 में अन्तरिम सरकार का गठन।
- 20 फरवरी, 1947 को एटली सरकार द्वारा भारत की स्वतंत्रता की घोषणा।
- मार्च, 1947 में माउण्टबेटन का आगमन तथा जून, 1947 में माउण्टबेटन योजना के आधार पर भारत की स्वतंत्रता।

विभाजन की ओर

- मुस्लिम बहुसंख्यक प्रांतों में जिन्ना का बढ़ता हुआ प्रभाव।
- 1945-46 के चुनाव में जिन्ना एवं लीग की सफलता।
- जुलाई, 1946 में कैबिनेट मिशन योजना की अस्वीकृति।
- 16 अगस्त, 1946 को लीग के द्वारा प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस की घोषणा। इसके साथ कलकत्ता, बंबई, बंगाल के नोआखली एवं बिहार के मुंगेर में दंगे छिड़े।
- मार्च, 1947 में पंजाब में दंगे।
- अन्तरिम सरकार में मुस्लिम लीग के द्वारा बाधा उपस्थित करना।
- जून, 1947 में माउण्टबेटन योजना तथा भारत का विभाजन।

स्वतंत्रता की ओर

1. **ब्रिटिश साम्राज्य का पतन :-** द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य ब्रिटिश साम्राज्य का पतन हो गया था। उसकी अर्थव्यवस्था में इतनी गिरावट आई कि ब्रिटिश, भारत में ज़्यादा समय तक बने रहने की स्थिति में नहीं थे। वस्तुतः ब्रिटेन को भारत से एक बड़ा लाभ प्राप्त था और वह था भारत से प्राप्त होने वाली गृहव्यय की एक बड़ी राशि, जिसके माध्यम से वह अपने व्यापारिक घाटे को पूरा करता। परंतु द्वितीय विश्व युद्ध के मध्य स्वयं ब्रिटेन ही भारत का कर्जदार बन गया।

- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत ही ब्रिटिश का सैनिक मुख्यालय था जहाँ से ब्रिटिश संपूर्ण एशिया में युद्ध का संचालन करते थे। इसी क्रम में ब्रिटिश ने भारत में 25 लाख सैनिकों की एक बड़ी सेना खड़ी कर दी और तोप खाना एवं अन्य विभागों को भी मजबूत बनाया। इस कारण अब भारत स्वयं ब्रिटेन से भी अधिक ताकतवर हो गया था। इसलिए भारत पर शासन करने का ब्रिटिश औचित्य समाप्त हो गया।

2. **भारत में निम्न स्तर तक राष्ट्रवादी चेतना का प्रसार :-** भारत में राष्ट्रीय आंदोलन तेज़ हो गया था। भारत छोड़ो आंदोलन ने साबित कर दिया था कि भारत से अंग्रेज़ों का जाना बस कुछ समय मात्र की बात है। इस आंदोलन ने भारत की स्वतंत्रता को प्राथमिकता की पहली सूची में ला दिया था।

- स्वतंत्रता के लिए नीचे से पड़ने वाले दबाव को भी कम करके नहीं आंका जा सकता। ट्रेड यूनियन और श्रमिक आंदोलन की घटनाओं में 1945-46 के बीच तेजी आ गई थी। इतना तक कि 1945 में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन ने सरकार से स्वतंत्रता की मांग की थी। दूसरी तरफ, 1946 में बंगाल में होने वाले तेभागा किसान आंदोलन तथा 1946 में होने वाले तेलंगाना किसान आंदोलन ने भी ब्रिटिश को भयभीत कर दिया और यह संकेत किया कि भारत में शासन करना उनके लिए बड़ा कठिन होगा।
- ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रमुख स्तंभ सेना एवं पुलिस में भी राष्ट्रवादी चेतना घर कर गई थी। इतना तक कि सिविल सेवा जैसा इस्पाती ढाँचा भी टूट चुका था।

3. **आजाद हिन्द फौज का मुकद्दमा एवं नौसैनिक विद्रोहः-** सुभाष चंद्र बोस ने आई.एन.ए. (आजाद हिंद फौज) एवं एक स्वतंत्र सरकार का गठन अक्टूबर, 1943 में जापान के समर्थन से सिंगापुर में किया था। हालाँकि सैन्य रूप से यह बहुत सफल नहीं रहा, लेकिन जब 1945 में आई.एन.ए. के सदस्यों के खिलाफ लाल किले में मुकदमा शुरू हुआ तो आई.एन.ए. के सदस्यों को पूरे भारत में सहानुभूति और समर्थन प्राप्त हुआ।

- नौसैनिक विद्रोह बॉम्बे के समुद्री तट पर स्थित एक जहाज़ एच.एम.आई.एस. तलवार से शुरू हुआ और बहुत जल्द ही यह सभी 22 जहाज़ों में फैल गया। यह विद्रोह फरवरी, 1946 में हुआ और एम.एस. खान इसके नेतृत्वकर्त्ता के रूप में उभरे। यह घटना भारत में ब्रिटिश शासन के लिये एक बड़ा खतरा थी।

4. **ब्रिटेन में सरकार का परिवर्तन तथा अल्पसंख्यकों के प्रति सरकार की नीति में परिवर्तन :-**

ब्रिटेन में सरकार का परिवर्तन हुआ तथा कंजरवेटिव पार्टी की जगह लेबर पार्टी की सरकार स्थापित हुई। मार्च, 1946 में क्लीमेंट एटली की सरकार ने घोषणा की कि अल्पसंख्यकों की माँगें विचारणीय हैं, परंतु उन्हें बहुसंख्यकों के हितों की उपेक्षा करके पूरा नहीं किया जा सकता। यह घोषणा भारत के संदर्भ में दृष्टि परिवर्तन की परिचायक थी। जिस प्रकार पहले ब्रिटिश नीति का बल भारत में विभाजन को प्रोत्साहन देने पर रहा था, वहीं अब उसका बल इस बात पर हो गया था कि अगर संभव हो सके तो भारत के विभाजन को रोका जाए।

5. **कैबिनेट मिशन योजना :-** मार्च, 1946 में कैबिनेट मिशन भारत आया। इसने जून, 1946 में अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसमें निम्नलिखित अनुशंसाएँ थीं-

1. इसने विभाजन को अस्वीकार कर दिया क्योंकि यह एक व्यावहारिक निर्णय नहीं था।
2. वैकल्पिक रूप से इसने एक तीन स्तरीय संरचना की अनुशंसा की–
   - **केंद्रीय सरकार:** एकीकृत कमज़ोर संघ, केवल रक्षा, विदेश नीति और संचार मामलों पर नियंत्रण रखेगा।
   - **प्रांतों का समूह:** प्रांतों को तीन समूह में विभाजित किया जाना था। समूह- 'A' में 6 हिंदू-बहुल प्रांतों को शामिल किया जाना था, जबकि समूह- ' B' में उत्तर-पश्चिम के तीन मुस्लिम-बहुल प्रांतों- सिंध, पंजाब एवं बलूचिस्तान को और समूह- 'C' में उत्तर-पूर्व के दो मुस्लिम-बहुल प्रांतों- असम एवं बंगाल को शामिल किया जाना था।
3. निर्वाचित संविधान सभा का गठन किया जाना था।
4. एक अंतरिम सरकार का गठन किया जाना था।

6. **अन्तरिम सरकार का गठन :-** सितंबर, 1946 में कैबिनेट मिशन योजना के आधार पर जवाहरलाल नेहरू के अधीन एक अंतरिम सरकार का गठन हुआ तथा 9 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक बुलाई गई। शुरू में मुस्लिम लीग इस सरकार में शामिल नहीं हुई। आगे वायसरॉय वेवेल के विशेष अनुरोध पर वित्त मंत्री लियाकत अली खान के नेतृत्व में लीग अंतरिम सरकार में शामिल हुई।

7. **एटली सरकार द्वारा भारत की स्वतंत्रता की घोषणा :-** 20 फरवरी, 1947 को क्लीमेंट एटली की सरकार ने एक घोषणा की, जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि जून, 1948 तक अंग्रेज़ी सरकार भारतवासियों को सत्ता सौंप देगी।

8. **माउण्टबेटन का आगमन तथा माउण्टबेटन योजना के आधार पर भारत की स्वतंत्रता :-**

वायसरॉय के रूप में माउंटबेटन मार्च, 1947 में भारत आया। वह एक प्रत्यक्ष एजेंडे के साथ-साथ एक अप्रत्यक्ष एजेंडे को लेकर भारत आया था। प्रत्यक्ष एजेंडे के तहत कैबिनेट मिशन योजना को लागू करने के लिये गंभीर प्रयास करना था, किंतु उसके अप्रत्यक्ष एजेंडे के तहत सावधानी के साथ अंग्रेज़ों को भारत से वापस जाना था, ताकि ब्रिटिश सरकार की इस प्रवृत्ति को पलायनवाद न माना जाए।

- माउंटबेटन ने विभाजन के मुद्दे पर विभिन्न भारतीय नेताओं से वार्ता आरंभ की। सबसे पहले उसने पटेल से वार्ता की, फिर नेहरू, गांधी और अंततः जिन्ना से वार्ता की।

- माउंटबेटन की आरंभिक योजना 'डिक्की बर्ड योजना' के नाम से जानी जाती है। इसे 'प्लान बाल्कन' भी कहते हैं। इसमें यह प्रावधान था कि ब्रिटिश भारत के विभिन्न प्रांत एवं देशी रियासतों को स्वतंत्र कर दिया जाए तथा उन्हें यह अधिकार प्राप्त हो कि वे अपनी इच्छानुसार भारत अथवा पाकिस्तान में शामिल हो जाएँ, किंतु जब माउंटबेटन ने यह योजना शिमला में जवाहरलाल नेहरू के समक्ष रखी तो उन्होंने इसे पूरी तरह अस्वीकार कर दिया।
- 3 जून, 1947 को माउंटबेटन योजना के रूप में जो प्रस्ताव रखा गया था, वास्तव में उसे वी.पी. मेनन के साथ मिलकर वल्लभभाई पटेल ने तैयार किया था। इसमें ब्रिटिश भारत को दो डोमिनियन राज्यों, यथा- भारत और पाकिस्तान में विभाजित करने का प्रावधान था तथा देशी राज्यों को अपनी क्षेत्रीय अवस्थिति के अनुसार भारत अथवा पाकिस्तान के साथ विलय करना था।
- इस योजना को 4 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश संसद के द्वारा अनुमोदन मिल गया, फिर 18 जुलाई को इसे ब्रिटिश क्राउन की स्वीकृति मिली। फिर इसे क्रमशः 14 और 15 अगस्त को पाकिस्तान तथा भारत के संदर्भ में लागू किया गया।

विभाजन की ओर

- **मुस्लिम बहुसंख्यक प्रांतों में जिन्ना का बढ़ता हुआ प्रभाव :-** द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभ होने के बाद कांग्रेस की प्रांतीय सरकारों का त्यागपत्र दिया जाना घातक सिद्ध हुआ क्योंकि उसके कारण जो राजनीतिक शून्य की स्थिति उत्पन्न हुई, उसे मुस्लिम लीग ने शीघ्र भर दिया अर्थात् मुस्लिम लीग की प्रगति हुई।
- **1945-46 के चुनाव में जिन्ना एवं लीग की सफलता:-** 1945-46 के चुनाव में कांग्रेस को बड़ी सफलता प्राप्त हुई परंतु साथ ही मुस्लिम लीग को भी सफलता प्राप्त हुई। पहली बार 2 मुस्लिम बहुल प्रांतों में उसकी सरकारें बनी और फिर केंद्रीय विधान मंडल की आरक्षित सीटें भी उसी को प्राप्त हो गईं। इसका अर्थ था कि 1937 एवं 1945 के बीच मुस्लिम लीग की अत्यधिक प्रगति हो चुकी थी और वह मुस्लिम संप्रदायवाद को अभिजात्य चरण से जन समुदाय के स्तर तक पहुंचा चुकी थी।

- **जुलाई, 1946 में कैबिनेट मिशन योजना की अस्वीकृति तथा प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस की घोषणा:-** शुरू में मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन योजना को स्वीकार कर लिया था, लेकिन प्रांतीय समूह के विभाजन के मुद्दे पर मतभेद सामने आए और मुस्लिम लीग इस योजना से पीछे हट गई। 16 अगस्त, 1946 को मुस्लिम लीग ने 'प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस' की घोषणा की। हालाँकि, प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस का उद्देश्य शांतिपूर्ण प्रदर्शन था, लेकिन इस दिन कलकत्ता में मुस्लिम लीग की सरकार द्वारा नरसंहार शुरू कर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप बंबई, पूर्वी बंगाल के नोआखली और बिहार के मुंगेर ज़िले में हिंदू-मुस्लिम दंगे भड़क गए।

- **अन्तरिम सरकार में मुस्लिम लीग के द्वारा बाधा उपस्थित करना :-** इस तनाव के माहौल में जब सितंबर, 1946 में अंतरिम सरकार का गठन हुआ तो सरकार का संचालन कठिन हो गया। सरकार के अंतर्गत लीग के मंत्रियों का नज़रिया नकारात्मक रहा तथा उनका उद्देश्य कार्यवाहियों को रोकना रहा। अतः सर्वप्रथम कॉन्ग्रेसी नेताओं में सरदार वल्लभभाई पटेल अत्यधिक क्षुब्ध हो गए तथा वे विभाजन की सच्चाई को स्वीकार करने के लिये तैयार हो गए। इसी क्रम में 20 फरवरी, 1947 को एटली की सरकार की घोषणा आयी जिसमें यह आश्वासन दिया गया था कि जून, 1948 तक भारत को प्रत्येक स्थिति में स्वतंत्रता मिल जायेगी। साथ ही, यह भी संकेत दिया गया कि सत्ता के केंद्र एक से अधिक भी हो सकते हैं।

- **मार्च, 1947 में पंजाब में दंगे :-** ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वतंत्रता की तिथि घोषित करना घातक साबित हुआ, क्योंकि इसे मुस्लिम लीग ने एक अवसर के रूप में लिया। फिर मार्च, 1947 में मुस्लिम लीग ने पंजाब में सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ कर खिज्र हयात खान की सरकार को गिरा दिया। लेकिन, लीग के इस गैर-विधिक कार्य के परिणामस्वरूप पंजाब में दंगा भड़क गया।
- **जून, 1947 में माउण्टबेटन योजना तथा भारत का विभाजन :-** मार्च, 1947 में नए वायसराय के रूप में माउंटबेटन का आगमन हुआ जिसका घोषित रूप में उद्देश्य कैबिनेट मिशन योजना को लागू करवाना था, परंतु माउंटबेटन ने ऐसा महसूस किया कि तात्कालिक परिस्थितियों में कैबिनेट मिशन योजना को लागू करना कठिन था। अतः माउंटबेटन ने विभाजन को प्राथमिकता दी। फिर विभिन्न राजनीतिक नेताओं से वार्ता कर उसने 3 जून, 1947 को माउंटबेटन योजना प्रस्तुत की। इसी आधार पर 14 अगस्त को भारत का विभाजन हो गया।

प्रश्नः- "द्वितीय विश्वयुद्ध ने भारत की स्वतंत्रता के साथ-साथ विभाजन को भी प्रोत्साहन दिया।" इस कथन का सोदाहरण विश्लेषण कीजिये।

(प्रश्न विश्लेषणः यह प्रश्न अपने स्वरूप में **Hypothetical** है। **Key Words** हैं- 'द्वितीय विश्वयुद्ध', 'स्वतंत्रता', 'विभाजन', 'प्रोत्साहन', 'सोदाहरण विश्लेषण'।)

उत्तरः- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के मध्य स्वतंत्रता एवं विभाजन की दिशा में साथ-साथ प्रगति होती रही तथा द्वितीय विश्वयुद्ध इस प्रगति के मार्ग में एक निश्चित भू-चिह्न (**Land Mark**) बनकर आया।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने निम्नलिखित रूप में स्वतंत्रता को प्रोत्साहन दिया-

- इसने भारत में एक व्यापक जन-असंतोष को जन्म दिया तथा इसका परिणाम था- भारत छोड़ो आंदोलन। इस आंदोलन ने भारत की स्वतंत्रता के मुद्दे को प्राथमिक राष्ट्रीय मुद्दा बना दिया।

- आज़ाद हिंद फौज एवं नौसैनिक विद्रोह ने यह सिद्ध कर दिया कि अब ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे मज़बूत स्तंभ 'सेना' भी राष्ट्रवाद से प्रभावित हो चुका है।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य स्वयं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन हो गया था, अतः भारत को स्वतंत्र करना ब्रिटेन की मज़बूरी थी।

परंतु, दूसरी तरफ द्वितीय विश्वयुद्ध ने भारत के विभाजन को भी बल प्रदान किया। युद्ध के मध्य मुस्लिम लीग की सहायता प्राप्त करने के लिये सरकार ने उसे भारत के संवैधानिक विकास के विरुद्ध वीटो की शक्ति दे दी। लीग ने इसका खुलकर उपयोग किया तथा वेवेल योजना जैसे महत्त्वपूर्ण संवैधानिक प्रस्ताव को ध्वस्त कर दिया।

इस प्रकार, द्वितीय विश्वयुद्ध ने भारत की स्वतंत्रता एवं इसके विभाजन, दोनों को प्रोत्साहन दिया।

प्रश्नः- 'विभाजन के कारणों को जानने से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है भारत के विभाजन के परिणाम को समझना।' इस कथन का युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

उत्तरः- भारत के विभाजन के पश्चात् लगभग पाँच दशकों तक विद्वानों और इतिहासकारों ने भारत के विभाजन की पड़ताल करने में गहरी रूचि दिखाई थी। उनका पूरा ध्यान इस बात का पता लगाने पर रहा था कि विभाजन के लिए कौन उत्तरदायी था।

परंतु पिछले दो दशकों से विद्वानों और इतिहासकारों की सोच एवं बहस की दिशा बदल चुकी है तथा विभाजन के कारणों की जगह उसके प्रभावों के मूल्यांकन पर विशेष बल दिया जा रहा है क्योंकि इस विभाजन ने भारत और पाकिस्तान पर ही अपना प्रभाव नहीं छोड़ा, बल्कि लगभग सम्पूर्ण दक्षिण एशिया को प्रभावित किया। उसके प्रभाव को निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं–

1. दक्षिण एशिया में भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के रूप में तीन भिन्न राष्ट्रों का निर्माण हुआ। फिर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव ने परमाणु हथियारों की प्रतिस्पर्द्धा को भी जन्म दे दिया।
2. इन दोनों देशों के बीच तनाव के कारण **SAARC** जैसा संगठन भी विफल सिद्ध हुआ।
3. विभाजन ने भारत में संविधान के स्वरूप पर भी प्रभाव डाला। उदाहरण के लिए, भारत में संघीय व्यवस्था, नागरिकता, मौलिक अधिकार सभी प्रावधानों पर विभाजन का प्रभाव देखा जा सकता है।
4. सबसे बढ़कर इसने भारत के अन्दर भी हिन्दू एवं मुस्लिम जनसंख्या के बीच पारस्परिक अविश्वास का भाव पैदा कर दिया।

अन्त में, हम यह भी पाते हैं कि उसने भारत में गंगा-यमुनी संस्कृति अथवा समन्वित संस्कृति को भी दुष्प्रभावित किया।

*****

समाप्त